Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

आईश्री देवल माँ : ऐतिहासिक परिदृश्य

गोपाल दान*

* शोधार्थी (इतिहास) ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – श्री देवल माता जी का जन्म चारण जाति की सिंहढायच गौत्र में जैसलमेर जिले की पोकरण तहसील के माड़वा गांव में हुआ था। मां देवल जैसलमेर महारावल घड़सी जी, अमरकोट के राणा वीसा जी और करणी माता जी के समकालीन थे।

देवल माता जी और करणी माता आपस में मौसेरी बहन थी। करणी माता जी का ससुराल देशनोक (बीकानेर) था तो देवल माता जी का ससुराल खारोड़ा (अमरकोट, सिंध) था। श्री देवल माता जी ने मां हिंगलाज के वचनानुसार गृहस्थी जीवन का पालन किया था। देवल माता जी का विवाह खारोड़ा के देथा शाखा के चारण बापन जी देथा के साथ हुआ था।

महाशक्तियां बूट भवानी और बहुचरा राय देवल माता जी की ही बेटियां थीं। जैसलमेर महारावल घड़सी जी के अदीठ पीड़ा (कैंसर) की बीमारी थी जिसे माता जी ने अपने चमत्कार से ठीक किया था।(इसका उल्लेख जैसलमेर की तवारीख में भी मिलता है।)[1]

महारावल घड़सी जी ने देवल माता जी को जागीर देकर यहीं जैसलमेर में निवास करने का निवेदन किया जिसे माता जी ने स्वीकार नहीं किया। माता जी ने महारावल घड़सी जी से 18 वर्ण अर्थात 36 कौम के लोक मांगे, घड़सी जी ने माता जी की आज्ञानुसार 36 लोक बगसीश किए (गोयल दर्जी, कुलरिया सुथार, गोदारा जाट, प्रजापत, कागा व जोगू मेघवाल, देसार मंगनीयार इत्यादि सभी जातियां) श्री देवल माता जी भारत तो क्या विश्व की एक मात्र ऐसी शक्ति थे जिन्हें 36 लोक (कौम) प्रिय थी, इन सभी को माता जी ने अपनी जागीर खारोड़ा में बसाया।

यूं तो माता जी के चमत्कार और मंदिर बहुत सारे हैं जिन्हें यहां लिखते लिखते फेसबुक ही हैंग हो जाएगी, यहां पर मैं आपको सुमलियाई गांव के मंदिर के बारे में संक्षिप्त जानकारी देना चाहता हूं।

जब देवल माता जी गड़ीसर तालाब का लोकार्पण करने के लिए जैसलमेर पधार रहे थे (महारावल घड़सी जी ने मां देवल के आदेशानुसार ही गड़ीसर तालाब खुदवाया था।) तब रास्ते में सुमलियाई गांव कुछ समय के लिए रुके थे। सुमलियाई गांव के लोगों ने माता जी का बहुत ही आदर सत्कार किया तथा अपने यहां पानी न होने की समस्या से अवगत करवाया।(पानी की समस्या उस समय जैसलमेर–बाडमेर की बहुत बड़ी समस्या थी) माता जी ने यहां पर बेरियां खोदने का आशीर्वाद दिया तथा साथ ही पर्याप्त मात्रा में पानी निकलने का आशीर्वाद दिया। लोगों ने माता जी के निर्देशानुसार खुदाई की यहां पर मात्र 20 फीट पर अथाह पानी निकल आया। यह बेरियां आज भी यहां पर मौजूद हैं।

वैसे तो माता जी का 36 कौम के लोग (सिंध और हिंद दोनों में) बड़ी श्रद्धा के साथ स्मरण करते हैं लेकिन जिस प्रकार से मां करणी राठौड़ राजवंश की आराध्य देवी है उसी प्रकार मां देवल सोढा राजवंश की आराध्य देवी है।[2]

इतिहास चारणों की सबसे बड़ी जागीर खारोड़ा(सिंध, पाकिस्तान) का। परमार वंश में सोढ़ा जी नाम का एक पराक्रमी शासक हुआ जिसके नाम से परमार वंश में अलग से एक राजपूत राजवंश का उदय हुआ। इसी सोढ़ा जी ने सन् 1124 ई में रतोकोट दुर्ग को जीतकर अपनी स्वतंत्र रियासत की स्थापना की। कवि चिमन जी कविया ने अपने ग्रंथ 'सोढायण' में 12 वीं सदी में इस किले पर सोढ़ा राजपूतों का शासन स्थापित होने का उल्लेख किया है।

सोढायण के अनुसार बाहड़मेर नगर के संस्थापक परमार राजा बाहड़राय के पौत्र और राजा चाहड़राय के पुत्र सोढ़ा ने 1124 ई में रतो मुगल को मारकर रतोकोट पर अधिकार कर लिया। यह रतोकोट वर्तमान में सिंध प्रांत के सांगड़ जिले में है।

सोढ़ा जी के पुत्र चाचक देव हुए और चाचक देव के पुत्र रायदेव हुए। रायदेव अपने दादा सोढ़ा जी की तरह बहुत बड़ा पराक्रमी और साम्राज्यवादी नीति का शासक हुआ जो कि अमरकोट पर अपना शासन स्थापित करना चाहता था।[3]

अमरकोट पर उस समय सूमरा जाति के मुस्लिमों का शासन था। (सुमरा जाति परमार वंश से ही अलग होकर बनी परन्तु कालान्तर में सूमरों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था।)

राणा रायदेव किसी भी परिस्थिति में अमरकोट विजय करना चाहता था परन्तु इसे आसानी से जीतना संभव नहीं था। अत: राणा रायदेव ने इस संबंध में 'जंफ चारण' का सहयोग लेना उचित समझा। राणा रायदेव इस संबंध में आश्वस्त था कि चारण कभी भी हमारे साथ गद्दारी नहीं करेगा और उसकी सलाह व सहायता से हम आसानी से अमरकोट को जीत लेंगे।

जंफ चारण 'देथा जागीर' का रहने वाला देथा शाखा का चारण था।

जंफ चारण उस समय उम्र में बहुत ही छोटा था परन्तु बहुत ही कुशाग्र और तीव्र बुद्धि का था। उसने समस्त अमरकोट की रैकी की और सूमरों की कमजोरियों और सैन्य ताकत का गहन परीक्षण किया।

तेजसिंह सोलंकी अपनी पुस्तक 'अमरकोट जो इतिहास' के पृष्ठ संख्या 7 पर इस संबंध में लिखते हैं कि राणा रायदेव ने अमरकोट पर कब्जा करने की कोशिश की। तथा अमरकोट की हकीकत जानने के लिए जंफ चारण को अमरकोट भेजा। जंफ चारण बिना किसी रोक–टोक के अमरकोट पहुंचा और

वहां की परिस्थितियों से वाकिफ होकर राणा रायदेव को अमरकोट पर आक्रमण करने की सलाह दी।

राणा रायदेव ने जंफ चारण के सहयोग से विक्रमी संवत् 1282 (1226 ई) में अमरकोट को जीता। 'रेगिस्तान जी तवारीख' (पृष्ठ संख्या 41-42) में 'रायचंद हरिजन' लिखता है कि जंफ चारण बगैर किसी परेशानी के अमरकोट की पूरी जानकारी से वाकिफ होकर वापस आया तथा सूमरों की सैन्य ताकत और कमजोरियों के बारे में रायदेव को बताया। राणा रायदेव ने जंफ चारण की सलाह अनुसार सेना का गठन कर अमरकोट पर आक्रमण किया संवत् 1282 (1126 ई) में युद्ध में हुआ जिसमें 125 सुमरे मारे गए और बाकी सब भाग गए। इस प्रकार से सोढों का अमरकोट पर शासन स्थापित हुआ।[4]

तत्पश्चात राणा रायदेव के पुत्र राणा जयभ्रम हुए तथा राणा जयभ्रम के पुत्र राणा जसहड़ हुए। राणा जसहड़ ने अपने पिता राणा जयभ्रम की तरफ से संवत् 1291 (1234 ई) में करोड़ पसाव के साथ बारह गांवों सहित खारोड़ो गांव जंफ देथा को जागीर में इनायत किया।

सोढ़ा वंश की राव जी की बही में इसका वर्णन इस प्रकार से है –

सहस्त्र धेन सलवार, असी धरवाहण अग्गळ।
त्रण सौ कुढ़ै तीस, जिकै दूजणै महाजळ।
सांढै करहा सौ सात, दुणक पचास दु अग्गळ।
भिड़ज वीसां दस भला, बाज जेहड़ा वेगाग्गळ।
अधकोड़ गरथ जसहड़, उचत एकांणुऐ प्रमार हू।
झंफ नां दीध खारोहड़ौ, संमत बारै जैभ्रम सहू।।[5]

इस प्रकार से राणा जसहड़ ने संवत् 1291 में खारोडो जंफ देथा को जागीर मे दिया। ध्यातव्य है कि खारोड़ा और अमरकोट का राज आज भी जंफ देथा और राणा रायदेव के वंशजों के पास हैं।विक्रम संवत 1291 में अमरकोट के राणा जसहड़ ने जंफ देथा को बारह गांवों की जागीरी के साथ खारोड़ो गांव जागीर में दिया।

जंफ के पुत्र खींया जी हुए तथा खींया जी पुत्र रेलण जी हुए। रेलण जी के पुत्र भूपत जी हुए जो कि महान् विद्धान और हिंगलाज माता जी के परम भक्त थे। भूपत जी ने सात बार हिंगलाज माता मंदिर (बिलोचिस्तान) की यात्रा की। और सातों ही बार घर आते वक्त अफूटे (उल्टे पांव) घर आए अर्थात हिंगलाज माता जी को अपनी पीठ नहीं दिखाई।

इनकी इस तपस्या से हिंगलाज माता जी बहुत ही खुश हुए और भूपत जी को साक्षात् दर्शन देकर उनकी इच्छा जानी, तब भूपत जी ने हिंगलाज माता जी से अपने घर पधारने का वचन मांगा। हिंगलाज माता जी ने भूपत जी को तीसरी पीढ़ी में उनके घर पुत्र वधु के रुप में घर आने का वचन दिया।

भूपत जी के पुत्र कोचर जी और मालो जी हुए, कोचर जी महान् विद्धान और घोड़ों के व्यापारी थे। कोचर जी अपने जीवन काल में ही सिंध को छोड़कर मारवाड़ में बस गए इनके वंशज कोचर कहलाते हैं। जो कि बोरुंदा (जोधपुर), गोविन्द पुरी (हरियाणा), गुजरात व अन्य कई स्थानों पर रहते हैं।

मालो जी के पुत्र माहट जी हुए तथा माहट जी के पुत्र बापन जी हुए इनको कई जगह पर बापल जी भी लिखा गया है। इसी दरम्यान वर्तमान जोधपुर जिले के मोगड़ा गांव में श्री भल्ला जी सिंहढायच के घर श्महाशक्ति श्री देवल माता जीश का जन्म हुआ।

कालांतर में यह परिवार मोगड़ा (जोधपुर) से माड़वा (जैसलमेर) में बस गया। मां हिंगलाज के वरदान स्वरूप भूपत जी की तीसरी पीढ़ी में उनके पड़पौत्र श्री बापन जी हुए और बापन जी की शादी मां हिंगलाज के अवतार श्री देवल माता जी से हुई।

श्री कैलाश दान जी झीबा (झांफली) ने अपनी एक रचना में इस घटनाक्रम का वर्णन इस प्रकार से किया है –

भल देथो भूपत भगत,
जो हिंगलाज जाय।
जग जननी सेवत जठे,
अपूठो घर आय।।
विध अण भूपत गयो वले,
सुकवी फेरा सात।
सनमुख जद प्रगटी सगत,
मांग मांग कह मात।।
भूपत मुख सु इम भणे,
गणे नही दिल ज्ञान।
माँ हाले घर माहरे,
सगत वधारो शान।।
अम्बा कहियो आवसु,
तीजी पीढ़ी तोय।
तुज पड़ पोतो शिव तवो,
हूँ गवरजा होय।।
भूपत रे सुत मालो भयो,
माले रे माहट्ट।
माहट सुत बापन मुणा,
शिव अंश रूप सुभट।।
महि उजल धन माडवो,
सिंढायच कुळ साख।
तात भलियो वीरा तवा,
आढी जननी आख।।
ऊमा रूप अवतार ले,
देवल नाम दिराय।
पुजे शिवरी पूतली,
मिटटी री महमाय।।
वरस तेरे रहिया वले,
शीश खुले सुरराय।
निजरा बापन निरखीयो,
अखे सरवर आय।।
चित हस ओढ़ी चुन्दडी,
भेद सहेल्यो भाख।
वर बापन देवल वधु,
एह सनातन आख।।
जोतस जोशी जोवियो,
मकर लगन खट मास।
शंकर ऊमा सम्बध रो,
प्रत्यक्ष हुआ परकास।।
नवतोरणिये नामरो,

मगरो जेथ महान।
ऊभा नव थम्भा अजे,
प्राचीनता परमान।।
चवरी भेले चाडिये,
अवर कन्याओ आठ।
परणे देवल पधारिया,
धरा सुरंगी घाट।।

श्री देवल माता जी के समकालीन अमरकोट के राजा राणा वीसा जी हुए। राणा वीसा जी से उनके चचेरे भाई वीरमदे के पौते 'डूढा' ने धोखे से राजगद्दी छीन ली थी। राणा वीसा जी देवल माता जी का परम भक्त था, राजगद्दी छीनी जाने के बाद देवल माता जी की शरण में आया और देवल माता जी के आशीर्वाद से अमरकोट की राजगद्दी को पुन: प्राप्त की।

श्री गिरधर दान जी रतनूं दासोड़ी ने अपनी एक रचना में इसका इस प्रकार से वर्णन किया है –

उवो माड़ रें राव ढीमम् अदीठो, मुद्दे रीझ नें मात कीधो मदीठो।
कियो कोप देवी ढूढो नाश कीनो, दयालीज वीसै नें धाट दीनो।।

इतिहास चारणों की सबसे बड़ी जागीर खारोड़ा(सिंध, पाकिस्तान) का। (भाग–1)

परमार वंश में सोढ़ा जी नाम का एक पराक्रमी शासक हुआ जिसके नाम से परमार वंश में अलग से एक राजपूत राजवंश का उदय हुआ।

इसी सोढ़ा जी ने सन् 1124 ई में रतोकोट दुर्ग को जीतकर अपनी स्वतंत्र रियासत की स्थापना की। कवि चिमन जी कविया ने अपने ग्रंथ 'सोढायण' में 12 वीं सदी में इस किले पर सोढ़ा राजपूतों का शासन स्थापित होने का उल्लेख किया है।

सोढायण के अनुसार बाहड़मेर नगर के संस्थापक परमार राजा बाहड़राय के पौत्र और राजा चाहड़राय के पुत्र सोढ़ा ने 1124 ई में रतो मुगल को मारकर रतोकोट पर अधिकार कर लिया। यह रतोकोट वर्तमान में सिंध प्रांत के सांगड़ जिले में है।

सोढ़ा जी के पुत्र चाचक देव हुए और चाचक देव के पुत्र रायदेव हुए। रायदेव अपने दादा सोढ़ा जी की तरह बहुत बड़ा पराक्रमी और साम्राज्यवादी नीति का शासक हुआ जो कि अमरकोट पर अपना शासन स्थापित करना चाहता था।

अमरकोट पर उस समय सूमरा जाति के मुस्लिमों का शासन था।(सुमरा जाति परमार वंश से ही अलग होकर बनी परन्तु कालान्तर में सूमरों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था।) राणा रायदेव किसी भी परिस्थिति में अमरकोट विजय करना चाहता था परन्तु इसे आसानी से जीतना संभव नहीं था। अत: राणा रायदेव ने इस संबंध में 'जंफ चारण' का सहयोग लेना उचित समझा। राणा रायदेव इस संबंध में आश्वस्त था कि चारण कभी भी हमारे साथ गद्दारी नहीं करेगा और उसकी सलाह व सहायता से हम आसानी से अमरकोट को जीत लेंगे।

जंफ चारण 'देथा जागीर' का रहने वाला देथा शाखा का चारण था। जंफ चारण उस समय उम्र में बहुत ही छोटा था परन्तु बहुत ही कुशाग्र और तीव्र बुद्धि का था। उसने समस्त अमरकोट की रैकी की और सूमरों की कमजोरियों और सैन्य ताकत का गहन परीक्षण किया।

तेजसिंह सोलंकी अपनी पुस्तक 'अमरकोट जो इतिहास' के पृष्ठ संख्या 7 पर इस संबंध में लिखते हैं कि राणा रायदेव ने अमरकोट पर कब्जा करने की कोशिश की। तथा अमरकोट की हकीकत जानने के लिए जंफ चारण को अमरकोट भेजा। जंफ चारण बिना किसी रोक–टोक के अमरकोट पहुंचा और वहां की परिस्थितियों से वाकिफ होकर राणा रायदेव को अमरकोट पर आक्रमण करने की सलाह दी।

राणा रायदेव ने जंफ चारण के सहयोग से विक्रमी संवत् 1282 (1226 ई) में अमरकोट को जीता।[6] 'रेगिस्तान जी तवारीख' (पृष्ठ संख्या 41–42) में 'रायचंद हरिजन' लिखता है कि जंफ चारण बगैर किसी परेशानी के अमरकोट की पूरी जानकारी से वाकिफ होकर वापस आया तथा सूमरों की सैन्य ताकत और कमजोरियों के बारे में रायदेव को बताया।

राणा रायदेव ने जंफ चारण की सलाह अनुसार सेना का गठन कर अमरकोट पर आक्रमण किया संवत् 1282 (1126 ई) में युद्ध में हुआ जिसमें 125 सुमरे मारे गए और बाकी सब भाग गए।

इस प्रकार से सोढों का अमरकोट पर शासन स्थापित हुआ। तत्पश्चात राणा रायदेव के पुत्र राणा जयभ्रम हुए तथा राणा जयभ्रम के पुत्र राणा जसहड़ हुए। राणा जसहड़ ने अपने पिता राणा जयभ्रम की तरफ से संवत् 1291 (1234 ई) में करोड़ पसाव के साथ बारह गांवों सहित खारोड़ो गांव जंफ देथा को जागीर में इनायत किया।

सोढ़ा वंश की राव जी की बही में इसका वर्णन इस प्रकार से है –

सहस्त्र धेन सलवार, असी धरवाहण अग्गळ।
त्रण सौ कुढ़ै तीस, जिकै ढूजणै महाजळ।
सांढै करहा सौ सात, दुणक पचास दु अग्गळ।
भिड़ज वीसां दस भला, बाज जेहड़ा वेगाग्गळ।
अधकोड़ गरथ जसहड़, उचत एकांणुऐ प्रमार हू।
झंफ नां ढीध खारोहड़ौ, संमत बारै जैभ्रम सहू।।

इस प्रकार से राणा जसहड़ ने संवत् 1291 में खारोडो जंफ देथा को जागीर मे दिया। ध्यातव्य है कि खारोड़ा और अमरकोट का राज आज भी जंफ देथा और राणा रायदेव के वंशजों के पास हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. नाहर सिंह जसोल, चारणां री बातां।
2. नाहर सिंह जसोल, राजस्थान, गुजरात चारणां रे त्रागा अर त्याग री जूनी बाता।
3. गिरधर दान दासोडी, आत्मेत्सर्ग का आलोक।
4. भंवरसिंह सामौर, राजस्थानी शक्ति काव्य, साहित्य एकेडमी, नई दिल्ली।
5. मोहनलाल जिज्ञासु, चारण साहित्य का इतिहास, जैन प्रकाशन, जोधपुर।
6. 'रेगिस्तान जी तवारीख', पृष्ठ संख्या 41–42

****